ISSN 2349 - 137X
UGC CARE-listed, Peer Reviewed Journal

प्रतिध्वनि कला एवं
संस्कृति की

शोध लोक

वर्ष–9, अंक – 18, 2023
(जुलाई–दिसम्बर)

ISSN 2349-137X
UGC CARE-Listed Peer Reviewed

अनहद लोक

(प्रतिध्वनि कला एवं संस्कृति की)

वर्ष-9, अंक-18, 2023
(जुलाई - दिसम्बर)
(अर्धवार्षिक शोध पत्रिका)

सम्पादक
डॉ॰ मधु रानी शुक्ला

सम्पादक मण्डल
डॉ॰ राजश्री रामकृष्ण, डॉ॰ मनीष कुमार मिश्रा,
डॉ॰ धनंजय चोपड़ा, डॉ॰ ज्योति सिन्हा

सह सम्पादक
सुश्री शाम्भवी शुक्ला

व्यंजना
आर्ट एण्ड कल्चर सोसाइटी
109 डी/4, अबुबकरपुर, प्रीतम नगर, सुलेम सरांय
प्रयागराज - 211011

अनहद लोक

(प्रतिध्वनि कला एवं संस्कृति की)

सम्पादक : डॉ॰ मधु रानी शुक्ला
सम्पादक मण्डल : डॉ॰ राजश्री रामकृष्ण, डॉ॰ मनीष कुमार मिश्रा, डॉ॰ धनंजय चोपड़ा, डॉ॰ ज्योति सिन्हा
सहायक सम्पादक : सुश्री शाम्भवी शुक्ला
मल्टीमीडिया सम्पादक : श्रेयस शुक्ला

प्रकाशक एवं वितरक :
व्यंजना (आर्ट एण्ड कल्चर सोसाइटी)
109 डी/4, अबुबकरपुर, प्रीतम नगर
सुलेम सरांय, प्रयागराज - 211 001
मो॰ : 9838963188, 8419085095
ई-मेल : anhadlok.vyanjana@gmail.com
वेबसाइट : vyanjanasociety.com/anhad_lok

मूल्य : 300/- प्रति अंक, पोस्टल चार्जेज अलग से
सदस्यता शुल्क
वार्षिक : 700/-
तीन वर्ष : 2,100/-
आजीवन : 15,000/-

संगीत नाटक अकादेमी के सहयोग से प्रकाशित

© सर्वाधिकार सुरक्षित
- रचनाकारों के विचार मौलिक हैं
- समस्त न्यायिक विवाद क्षेत्र इलाहाबाद न्यायालय होगा।

मुद्रक :
गोयल प्रिन्टर्स
73 A, गाड़ीवान टोला, प्रयागराज
फोन - 0532-2655513

मार्गदर्शन बोर्ड :

डॉ॰ सोनल मानसिंह, पं॰ विश्वमोहन भट्ट, प्रो॰ ऋत्विक् सान्याल, प्रो॰ चित्तरंजन ज्योतिषि, पं॰ रोनू मजुमदार, पं॰ विजय शंकर मिश्र, प्रो॰ दीप्ति ओमचारी भल्ला, प्रो॰ के॰ शशि कुमार, प्रो॰ (डॉ॰) गुरप्रीत कौर, डॉ॰ राजेश मिश्रा

सहयोगी मण्डल :

प्रो॰ संगीता पंडित, प्रो॰ लावण्य कीर्ति सिंह 'काब्या', प्रो॰ निशा झा, प्रो॰ प्रभा भारद्वाज, प्रो॰ अर्चना अंभोरे, डॉ॰ राम शंकर, डॉ॰ इंदु शर्मा, डॉ॰ सुरेन्द्र कुमार, प्रो॰ भावना ग्रोवर, डॉ॰ स्नेहाशीष दास, डॉ॰ शान्ति महेश, डॉ॰ कल्पना दुबे, डॉ॰ बिन्दु के॰, डॉ॰ अभिसारिका प्रजापति, डॉ॰ पारुल पुरोहित वत्स, डॉ॰ मिठाई लाल

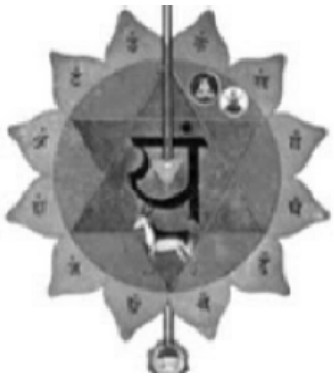

सम्पादकीय

'अनहद लोक' अंक 18 आप सभी के शुभ हाथों में सौंपते हुए अपार हर्ष एवं संतुष्टि का अनुभव हो रहा है। आप सभी की सकारात्मक प्रतिक्रियाओं से हमें निश्चित रूप से बल मिला है तथा निष्ठा व लगनपूर्वक कार्य करने की प्रेरणा मिलती है। जनवरी माह का प्रारंभ नए वर्ष के रूप में होता है और प्रारंभ होता है, त्योहार, उत्सवों तथा मेलों का, जो आपसी सौहार्द जागृत कर उत्सवधर्मी मन का सृजन करते हैं साथ ही पर्यटन को विस्तार देते हैं।

सांस्कृतिक और भौगोलिक विविधताओं के देश में व्यक्ति को विभिन्न प्रकार की संस्कृतियों, मेलों और त्योहारों का आनंद और अनुभव करने का अवसर मिलता है और भारत ऐसे अनुभवों का प्रतिनिधि है। एक ऐसा देश जहाँ हर कोस के बाद आपको एक नई बोली-भाषा की सांस्कृतिक पहचान मिलती है, आपको विविध पृष्ठभूमि, मान्यताओं और विरासत का आनंद लेने का मौका मिलता है। ये मेले और त्यौहार हमारे समाज के आंतरिक सांस्कृतिक ताने-बाने के साथ-साथ हमारी विरासत की निरंतरता का भी हिस्सा हैं। भारत के कुछ जीवंत, आकर्षक और सबसे खूबसूरत मेलों और त्योहारों का विवरण अद्भुत है, जो पूरे देश में आयोजित किए जाते हैं। भारत अनेक जाति, धर्मों, संस्कृतियों, परंपराओं की विविधताओं वाला देश है, सम्पूर्ण विश्व में भारत ही एक मात्र ऐसा देश है जहाँ सांस्कृतिक और धार्मिक मेला होता है, इसलिए भारत को मेले और त्यौहारों की भूमि भी कहा जाता है। इन मेलों का आयोजन प्राचीन समय से चला आ रहा है जो देश-दुनिया के लोगो के लिए आकर्षण का केंद्र होते हैं। देश के सभी भाग से लोग इन प्रसिद्ध मेलों में घूमने आते हैं, जो देश की संस्कृति, परम्पराओं और विविधताओं को उजागर करते हैं, इनका धार्मिक, सामाजिक और सांस्कृतिक महत्व होता है, ये मेले नवम्बर से मई माह के मध्य में लगते हैं, बारिश के मौसम को उपयुक्त नहीं माना जाता। कृष्ण लीला तथा दधिकाँदों जैसे मेले इस मौसम में भी लग जाते हैं। इन मेलों में गुब्बारे, खिलौने, कपड़े, जूते, कलाकृतियां, बर्तन, रसोई के उपकरण, घरेलू उपकरण, फर्नीचर आदि मिलते हैं, पुस्तक मेला में पुस्तकें, व्यापार मेला में व्यापारिक वस्तुएँ, पशु मेला में गाय, भैंस, बकरी, घोड़े, ऊँट आदि मिलते हैं।

- देश का सबसे महत्वपूर्ण और सबसे बड़ा धार्मिक आयोजन '**कुंभ मेला**' हर तीन साल में एक विशेष स्थान पर ग्रह के अनुसार होता है, यह मनुष्यों का सबसे बड़ा जमावड़ा होने के साथ-साथ रंगों से भी भरा हुआ त्योहार है क्योंकि देश के विभिन्न हिस्सों से नागा साधु अपने अखाड़ों के साथ मेला स्थल तक यात्रा करते हैं। यह उत्सव इलाहाबाद, नासिक, हरिद्वार और उज्जैन में आयोजित किया जाता है, जहाँ दुनिया भर से श्रद्धालु इन स्थानों में प्रवाहित होने वाली पवित्र नदियों में डुबकी लगाने और मेला स्थल पर विभिन्न साधुओं के उपदेश सुनने आते हैं। इसे दुनिया के सबसे विशाल आध्यात्मिक ज्ञानवर्धक त्योहारों में से एक माना जाता है।

- साल के सबसे बड़े धार्मिक आयोजनों में से एक '**पुरी रथयात्रा**' सबसे भव्य पैमाने का एक दृश्य है। रथयात्रा के दौरान हर साल पुरी के प्रसिद्ध जग्गनाथ मंदिर के पास दस लाख से अधिक श्रद्धालु एकत्रित होते हैं। यात्रा में तीन विशाल मंदिर के आकार के रथों को खींचकर गुंडिचा मंदिर तक ले जाया जाता है और नौ दिन बाद वापस जग्गनाथ मंदिर में ले जाया जाता है। यह यात्रा जून या जुलाई के महीने में आयोजित की जाती है और इसे हिंदू धर्म के सबसे पवित्र आयोजनों में से एक माना जाता है।
- देश के सबसे उत्तरी कोने में लद्दाख के ठंडे रेगिस्तानों के बीच रंगों, सुंदरता और पूजा का त्योहार मनाया जाता है जिसे **हेमिस फेस्टिवल** के नाम से जाना जाता है। स्वामी पद्मसंभव की मृत्यु के उपलक्ष्य में मनाया जाने वाला त्योहार लद्दाख की संस्कृति और बौद्ध धर्म को समझने के लिए एक बेहतरीन जगह है। यह उत्सव हर साल जून या जुलाई में लेह के प्रसिद्ध मठ 'हेमिस जांगचुब चोलिंग' में आयोजित किया जाता है। त्यौहार का मुख्य आकर्षण लामाओं द्वारा किया जाने वाला मुखौटा नृत्य है, जो रंगीन पोशाक और ड्रैगन मुखौटे पहनते हैं।
- महान ऐतिहासिक प्रासंगिकता का स्थान, मामल्लपुरम एक खूबसूरत तटीय शहर है जो मध्यकाल में पल्लवों के गृहनगर के रूप में जाना जाता है। खूबसूरत समुद्रतटीय शहर में भारत की कुछ सबसे लुभावनी चट्टानी मूर्तियां हैं और इसी पृष्ठभूमि में **मामल्लपुरम नृत्य महोत्सव** हर साल दिसंबर-जनवरी के दौरान तीन दिनों के लिए होता है। नृत्य के विभिन्न विद्यालयों के शास्त्रीय नर्तक लगातार तीन दिनों तक अपनी प्रतिभा का शानदार प्रदर्शन करने के लिए एकजुट होते हैं।
- बंगाल का **पौष मेला**, कटाई के मौसम के अंत का प्रतीक है, यह किसान और बंगाल की ग्रामीण जीवन शैली का उत्सव है। इसकी विशिष्टता बंगाल के शहरी और ग्रामीण पक्षों का एक साथ आना है। जो बंगाली लोक संगीत, विशेष रूप से बाऊल संगीत और लोक नृत्यों के माध्यम से बंगाली संस्कृति का जश्न मनाता है। राज्य भर से ग्रामीण कलाकार अपनी कलाकृतियों के साथ यहां इकट्ठा होते हैं और इसे बिक्री के लिए रखते हैं।
- हर साल जनवरी के आखिरी हफ्ते या फरवरी के पहले हफ्ते में आयोजित होने वाला मदुरै का **फ्लोट् फेस्टिवल** एक बहुत पुराना त्योहार है, जो शहर में लंबे समय से मनाया जाता रहा है। इस त्यौहार में मदुरै मंदिर के देवी-देवताओं को शहर की झील में नाव की सवारी के लिए ले जाया जाता है, यह परंपरा 17वीं शताब्दी के तमिल राजा द्वारा शुरू की गई थी। लेकिन सवारी से पहले, देवी-देवताओं को भोर में उनके मंदिर से एक जुलूस में बाहर निकाला जाता है, जिसके पीछे हजारों भक्त होते हैं और फिर झील के किनारे एक मंडप पर रखा जाता है, जहां भक्त अपनी प्रार्थना कर सकते हैं। बाद में देवताओं को झील के उस पार नाव की सवारी पर ले जाया जाता है।
- समृद्ध जनजातीय विरासत और परंपराओं वाला क्षेत्र का '**हॉर्नबिल फेस्टिवल**' उत्तर-पूर्वी राज्य नागालैंड में मनाया जाने वाला एक अनोखा लोक त्योहार है।, नागालैंड पर्यटन विभाग के द्वारा आयोजित यह त्योहार नागालैंड की संस्कृति और सुंदरता को दुनिया के सामने लाने का एक प्रयास है। प्रतिवर्ष 1 से 7 दिसंबर तक मनाया जाने वाला यह त्योहार, नागा जीवन शैली की एक अद्भुत प्रदर्शनी है, जो हजारों पर्यटकों को अपनी ओर आकर्षित करती है।

- जैसलमेर के लाल बलुआ पत्थर शहर **रेगिस्तान उत्सव** जो फरवरी माह में तीन दिनों तक राजस्थान के रेगिस्तानी जीवन का एक आकर्षक उत्सव है। यह भारतीय रेगिस्तान की लोक संस्कृति, संगीत, वस्त्र, आभूषण और खानाबदोश जीवन की परंपराओं की झलक दिखलाता है जहाँ लोककथाओं, संगीत और नृत्य प्रस्तुतियाँ होती हैं, रेगिस्तान का सबसे महत्वपूर्ण जानवर सजाया गया ऊँट इस उत्सव का मुख्य आकर्षण है।
- राजस्थान राज्य का सबसे बड़ा मेला और दुनिया के सबसे बड़े पशुधन मेलों में से एक **पुष्कर मेला** खानाबदोश संस्कृति और राजस्थान के सबसे खूबसूरत शहर का एक आकर्षक संगम है। यह मुख्य रूप से एक ऐसा स्थान है जहां ऊंटों और पशुओं की खरीद-फरोख्त होती है, लेकिन हाल के दिनों में विदेशी पर्यटकों के बीच इसकी बढ़ती लोकप्रियता के साथ 'मटका फोड़', 'ब्राइडल गेम्स' और 'सबसे लंबी मूंछें' जैसी प्रतियोगिताएं लोकप्रिय कार्यक्रम बन गई हैं। यात्रियों के लिए राजस्थान की खानाबदोश जीवन शैली को जानने का उत्तम अवसर है।
- एशिया का सबसे बड़ा पशु मेला '**सोनपुर मेला**', लगभग दो हजार वर्षों से अधिक मौर्य साम्राज्य के समय से जारी है। यह मेला मूलतः पक्षियों, कुत्तों, बकरियों, भैंसों, गधों और घोड़ों जैसे विभिन्न प्रकार के पशुओं की बिक्री और खरीद के लिए है। लेकिन मेले का मुख्य आकर्षण हाथी बाजार है, जहाँ गंगा नदी के तट पर सैकड़ों हाथी बिक्री के लिए पंक्तिबद्ध नजर आते हैं। इसके अलावा, क्षेत्र के प्रसिद्ध कलाकारों द्वारा संगीत और नृत्य का प्रदर्शन भी होता है।
- एक शाही जानवर के लिए **शाही त्योहार**, जयपुर में होली के अवसर पर आयोजित हाथी महोत्सव, लोगों द्वारा पसंद किया जाने वाला एक विशेष त्योहार है। यह त्योहार हाथियों को समर्पित है, जिसमें उन्हें सिर से पैर तक सबसे भव्य तरीके से सजाया जाता है। कार्यक्रम की शुरुआत खूबसूरती से सजाए गए हाथियों, घोड़ों और ऊंटों के जुलूस से होती है। यह आयोजन बहुत प्रतिष्ठित माना जाता है, जिसमें सबसे अच्छे से सजाए गए हाथी को पुरस्कार मिलता है। जुलूस के अलावा, हाथी दौड़, हाथी नृत्य और हाथियों और मनुष्यों के बीच रस्साकसी जैसे कार्यक्रम भी होते हैं।
- **बीकानेर ऊँट महोत्सव** राजस्थान के रेगिस्तान में सबसे अधिक पसंदीदा जानवर ऊँट का उत्सव है। *''रेगिस्तान का जहाज''*, जैसा कि वे उन्हें कहते हैं, त्योहार में ऊंटों को सुंदर कढ़ाई वाली पोशाकों में सजाया जाता है। यह हर साल जनवरी के महीने में एक बड़ी सभा की उपस्थिति में आयोजित किया जाता है। यह त्यौहार जूनागढ़ किले में सबसे सुंदर ढंग से सजाए गए ऊंटों के एक रंगीन जुलूस के साथ शुरू होता है, वहां से जुलूस पोलो ग्राउंड तक जाता है जहां ऊंट नृत्य जैसे अन्य कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं।
- **काला घोड़ा कला महोत्सव** कला, संगीत और संस्कृति का नौ दिवसीय महोत्सव है, जिसमें न केवल मुंबईकर अपने इतिहास के एक हिस्से का आनंद लेने और इसकी सुंदरता को पहचानने के लिए बड़ी संख्या में आते हैं, बल्कि दुनिया भर से लोग भी आते हैं। यह उत्सव हर साल जनवरी के आखिरी सप्ताह या फरवरी के पहले सप्ताह में मुंबई के सांस्कृतिक केंद्र काला घोड़ा जिले में होता है, जहां मुंबई की कुछ सबसे शानदार इमारतें और कला केंद्र हैं। काला घोड़ा जिला अपने संग्रहालयों, कला दीर्घाओं, कैफे और रेस्तरां के लिए जाना जाता है।

- अंगूर के बागानों, मदिरा, भोजन और मोहक संगीत का, फरवरी के पहले सप्ताहांत में आयोजित होने वाला **सुला उत्सव** अपने पिछले संस्करणों से बेहतर होने के वादे के साथ अपने सातवें वर्ष में प्रवेश कर रहा है। सुला अंगूर के बागों में आयोजित होने वाला उत्सव नासिक की पहाड़ियों, अंगूर के बागों के बीच आनंद लेने, शराब बनाने और इसे पीने के साथ-साथ कुछ उत्कृष्ट संगीत के साथ मनोरंजन करने का एक विशेष स्थान है।
- गोवा खूबसूरत समुद्र तटों, आरामदायक छुट्टियों और अद्भुत समुद्र तट का पर्याय है। गोआ में **कार्निवल** राज्य सरकार की मदद से पूरे राज्य में मनाया जाता है। इसमें पुर्तगाली विरासत का रचनात्मक झांकियों से भरी आकर्षक परेड का आनंद लेने, नृत्य करने और पूरी रात पार्टी करने के लिए लोग सड़कों पर आते हैं, कार्निवल पूरे राज्य में घूमता है। यह सांस्कृतिक कार्यक्रम मार्च में होता है।
- भारत का सबसे बड़ा नृत्य महोत्सव, **कोणार्क नृत्य महोत्सव** हमारी शास्त्रीय नृत्य विरासत का प्रतीक है। विश्व धरोहर स्थल - सूर्य मंदिर की पृष्ठभूमि में इसे आयोजित किया जाता है। फरवरी के महीने में आयोजित होने वाला यह उत्सव देश के सबसे बड़े सांस्कृतिक उत्सवों में से एक है क्योंकि यह मंदिर के गौरवशाली अतीत और इसकी परंपराओं का जश्न मनाने के लिए देश के सर्वश्रेष्ठ नृत्य कलाकारों के एक साथ आने का गवाह बनता है।
- **बोट रेस** भारत में सबसे अच्छे सांस्कृतिक कार्यक्रमों में से एक है। हर साल अगस्त महीने के दूसरे शनिवार को केरल में पुन्नमदा झील के बैकवाटर शहर अल्लापुझा में मनाया जाने वाला एक प्रसिद्ध त्योहार है। इस उत्सव में विभिन्न आकृतियों और आकारों की खूबसूरती से तैयार की गई नावें पुरस्कार राशि के लिए प्रतिस्पर्धा करती हैं, जिसमें मुख्य आकर्षण साँप नौका दौड़ होती है, जिसके विजेता को प्रतिष्ठित नेहरू ट्रॉफी से सम्मानित किया जाता है।
- **मोढेरा** सूर्य मंदिर के प्रांगण मनाया जाता है, यह नृत्य उत्सव, गुजरात के पर्यटन विभाग की ओर से हमारी मध्ययुगीन संस्कृति को सहेजने का उपक्रम है, हर साल जनवरी में आयोजित होने वाला इस सांस्कृतिक उत्सव में कला और स्थान का जश्न मनाने के लिए देश की बेहतरीन शास्त्रीय नृत्य उपासक प्रस्तुति देते हैं।
- **किला रायपुर महोत्सव** मूल रूप से एक खेल उत्सव है, जिसे ग्रामीण ओलंपिक के रूप में भी जाना जाता है। हर साल फ़रवरी के पहले सप्ताह में जालंधर के पास किला रायपुर गांव में आयोजित होने वाले इस उत्सव में हजारों लोगों की भीड़ आती है, जहाँ पंजाबी ग्रामीण इलाकों के विभिन्न हिस्सों से कबड्डी, ऑक्स रेसिंग, कुश्ती और कई अन्य कार्यक्रमों का आनंद लेने के लिए आते हैं।
- एशिया के सबसे भव्य साहित्यिक आयोजन, **जयपुर लिटरेचर फेस्टिवल** में साहित्य और विचार की दुनिया के सबसे प्रतिभाशाली नाम एक साथ आते हैं, जो तीन दिनों के बौद्धिक आनंद के लिए जयपुर के प्रसिद्ध डिग्गी पैलेस में एकत्रित होते हैं। इस महोत्सव ने सर्वश्रेष्ठ लेखकों को आकर्षित करने के लिए काफी प्रतिष्ठा हासिल की है, जो अपने बेहतरीन काम को दर्शकों के सामने पढ़ते और चर्चा करते हैं। जयपुर साहित्य महोत्सव जनवरी के अंतिम सप्ताह में आयोजित किया जाता है और कई लोग इसे गुलाबी शहर की खोज करने के साथ-साथ अपनी साहित्यिक भावनाओं का आनंद लेने के अवसर के

रूप में भी उपयोग करते हैं। इसी प्रकार जश्न-ए-रेख़्ता, लखनऊ लिटरेचर फेस्टिवल, गोरखपुर लिटरेरी फेस्ट जैसे देश के प्रतिष्ठित शहरों में पुस्तक मेला में ज्ञान वर्धन करने के लिए अनेक शहरों के लोग एकत्रित होते हैं।

- **लखनऊ महोत्सव** के दौरान हर दिसंबर में आयोजित होने वाला एक अनूठा उत्सव, **विंटेज कार फेस्टिवल** पूरे भारत से लोगों के विंटेज कार संग्रह का उत्सव है। 1904 में शुरू हुआ यह उत्सव लखनऊ की संस्कृति और विरासत का हिस्सा रहा है। यह उत्सव कुछ बेहतरीन विंटेज कार मॉडलों के प्रदर्शन के साथ देश भर से बहुत सारे कार प्रेमियों को आकर्षित करता है। इसी प्रकार आगरा महोत्सव, गंगा महोत्सव, मीरा महोत्सव, शिल्प मेला आदि का आयोजन देश के विभिन्न भागों में होता रहता है।
- भारत के सबसे आकर्षक आदिवासी मेलों में से एक, **तरनेतर मेला** गुजरात के तरनेतर गांव में आयोजित किया जाता है। भारत के सबसे बड़े स्वयंवरों में से एक है जहां आदिवासी पुरुष दुनिया में सबसे विस्तृत और सुंदर कढ़ाई वाली छतरियां लेकर शानदार कपड़े पहनकर मेले में आते हैं जिनके आधार पर कन्या वर का चयन करती है साथ ही सामान्य मनोरंजन के लिए लोक संगीत और नृत्य प्रदर्शन सांस्कृतिक उत्सव होता है।

डॉ॰ मधु रानी शुक्ला

अनुक्रम

गान

1.	Hindustani Classical Music is a path of Prayer and Worship- Padma Bhushan Pandit Sajan Mishra	*Sanghamitra Chakravarty*	3
2.	आगरा घराना एवं विशेषताएं	*अमित आनन्द*	7
3.	श्री नरिन्दर नरूला : संगीत और शिक्षा को समर्पित : एक व्यक्तित्व	*निर्मल कौर*	11
4.	संगीतकार सुरेन्द्र नेगी : कृतित्व एवं व्यक्तित्व	*यशवन्त*	17
5.	ग्वालियर घराना एवं विशेषताएँ	*राहुल सहोता* *डॉ॰ लता*	22

नर्तक

6.	'कथक नृत्य में कज्जलिका' - नृत्य रचना	*डॉ॰ हंस कुमारी*	29
7.	कथक नृत्य में लोक तत्व	*डॉ॰ नीमा कलौनी*	34
8.	Representation of Rama in The South Indian Dance- Drama Tradition of Kathakali	*Konduparti Maalyada* *Dr. Beena. G*	39
9.	विष्णुधर्मोत्तर पुराण में नृत्यकला के तत्व	प्रियंका तिग्गा *डॉ॰ खिलेश्वरी पटेल*	45
10.	भारतीय नृत्य कलाओं में प्रस्तुतिकरण तथा नवीन प्रवृत्तियाँ	*डॉ॰ एस. गौरीप्रिया* *सविता मौर्या*	52
11.	कथक नृत्य के प्रस्तुति क्रम में लय व ताल का सौन्दर्य	*सुचि कौशल* *रंजना उपाध्याय*	58

थाती

12.	Dara Festival: An Emerging Landmark of the Cultural Heritgae of Rajasthan	*Dr. Abhishek Srivastava*	65
13.	मध्य भारत के जनजातीय नृत्य परम्परा में सांस्कृतिक तत्व	*डॉ॰ शैलेन्द्र कुमार*	70
14.	*Bhands :* The Traditional Folk Musicians of Kashmir	*Dr. Javid Ahmad Moochi*	75

15. काँगड़ी लोकगाथाओं में इतिहास, प्रकृति प्रेम एवं चिंतन — *डॉ. नेहा मिश्रा*, *मंजना कुमारी* — 79

16. लोक वाद्यों एवं लोक नृत्य में लोक-जीवन की व्याख्या — *श्रेया पांडेय*, *डॉ0 रामशंकर* — 86

17. हिमाचल प्रदेश की लोक संस्कृति में बसंत — *मनोज कुमार*, *डॉ॰ अंकित भट्ट* — 92

18. Ustad Mohammad Abdullah Tibetbaqal Their Contribution towards Sufiana Music of Kashmir — *Asif Farooq* — 97

19. कुम्भ्कारी लोक कला-एक ऐतिहासिक अध्ययन (पुरातन से अद्यतन काल तक) — *पल्लवी सोनी*, *प्रो॰ पाण्डेय राजीवनयन* — 103

20. Festivals of the Kumaun Region : Unveiling Cultural and Communal Significance — *Prerna Rana*, *Dr. Ranjana Upadhyay* — 110

अंकन

21. Modernism in Indian Sculpture and Ramkinkar Baij : A Study — *Dr. Ganesh Nandi* — 121

22. राजस्थान की लोक कला के विशेष सन्दर्भ में कला और लिपि का अन्तर्सम्बंध गोंड जनजाति का चित्र संस्कार — *डॉ॰ सुरेश चन्द्र जाँगिड़* — 126

23. गोंड जनजाति का चित्र संस्कार — *डॉ॰ किरन मिश्रा* — 133

24. Public Sculpture of Assam With Special Reference to Guwahati, Jorhat, And Cachar : An Overview — *Dr. Binoy Paul* — 138

25. जलरंग का ऐतिहासिक परिचय — *रजनी बाला*, *प्रो॰ (डॉ॰) राम विरंजन* — 145

26. मृण्मयी शिल्प का स्वरूप : तकनीक व मान्यताओं के संदर्भ में — *राम मनोज*, *प्रो॰ सरोज रानी* — 160

साहित्यकी

27. Revamping Mythological Space : A Critical Study of Rama Chandra Series by Amish Tripathi — *Dr. Manchusha Madhusudhanan* — 171

28. Destruction of Lavish Architecture and Lush Green Beauty : A Reading of the Poem Ruins of a Great House — *Dr. Rakhi Chauhan* — 177

29. From Awe to Aww : A Discursive Study of The Evolution of Monsters in Literature and Films — *Dr. Sarath S.*, *Aswathy V.N.* — 182

30. Work-Life Balance of Urban Middle-Class Women : Social and Cultural Perspectives from Bengali Literary Works of Post-Partition Era — *Jayasree Das* 190

31. 'कवितावली में वर्णित शंकर-स्तवन का भाव' — *प्रो॰ राजेश तिवारी, कु॰ शालिनी* 205

32. Traumatized Cyborgs : A Posthumanist outlook in Pat Cadigan's *Synners* — *C. Fansta Fernando, Dr. Beena. G* 212

33. अवैध संबंधों के यथार्थ को उजागर करता नाटक 'दूसरा आदमी दूसरी औरत' — *देवानंद यादव* 218

34. Exploring the Impact of Violence and Gender Power Dynamics in Barbara Kingsolver's *Unsheltered* — *Kowsalya RM, Dr. Prem Shankar Pandey* 223

35. दाम्पत्य के अनंत आतंक में प्रतिरोधी स्त्री-पुरुष मन — *प्रियंका श्रीवास्तव, डॉ॰ रीता सिंह* 227

36. 'एक थी मैंने एक था कुम्हार' : उपन्यास में खेती से पलायन किसान विवशता — *मधु बाला* 237

37. Exploring the Revolutionary Essence of Badal Sircar in Indian Literature — *Sadaf Mushtaq Nasti, Yawer Ahmad Mir* 241

38. Magic in the Mundane: An Analysis of Magical Realism in Salman Rushdie's Midnight's Children — *Yawer Ahmad Mir* 247

39. Contextualizing The Channel of Status Quo Through Environmental Power Dynamics in The Select Novels of Barbara Kingsolver — *Kowsalya R M, Dr. Prem Shankar Pandey* 252

व्यक्तित्व

40. गुरुनानक की साधना - पद्धति (नाम - मार्ग) — *डॉ॰ हरजिंदर कौर* 263

41. 18वीं एवं 19वीं शताब्दी में लख़नऊ के प्रमुख संगीतज्ञों पर संक्षिप्त चर्चा एवं उनका योगदान — *अमित कुमार* 269

42. An Allegory at Play : A Study of Jogen Chowdhury's Selected Works — *Somaditya Datta* 274

43. बाबासाहेब डॉ॰ भीमराव अम्बेडकर के पत्रकारिता सिद्धांत (पत्रकारिता शिक्षण से संबद्ध विद्यार्थियों पर विशेष अध्ययन) — *शालिनी श्रीवास्तव, प्रो॰ गोपाल सिंह* 281

44 Signifying Nothing : Imageries of Cultural Trauma in the Poetry of Mona Zote — *Xavier Menezes* 290

प्रकीर्णक

45. ''कुछ परिवर्तनों के साथ संभव है शास्त्रीय संगीत का व्यापक प्रचार एवं प्रसार'' — *डॉ. शिप्रा मणिपद सरकार* — 299

46. "The Study of Sustainable Development of Pisoli Village – Haveli Taluka, Pune District" — *Prof. Deepika Mirchandani* — 303

47. इलेक्ट्रॉनिक एवं सोशल मीडिया का संगीत पर प्रभाव एक विश्लेषणात्मक अध्ययन — *डॉ॰ चित्रा चौरसिया* — 310

48. Twitter - a Public Sphere of Image Building through Political Communication — *Dr. Gaurav Shah* — 314

49. Gender Norms, Culture, Structural Violence : An Analysis of Devadasi System in India — *Dr. Jyotasana* — 321

50. मीरा स्त्री विमर्श — *डॉ॰ खुशबू* — 328

51. Role of Tamilnadu Eminent Martyrs' in Indian Freedom Struggle — *Mr. A. Selladurai, Dr. (Mrs.) R. Padmavathi* — 332

52. The Children's Film Society, India : Trends, Challenges and Opportunities for growth — *Jyoti Kushwaha* — 340

53. "The Study of Stress Management At Workplace In India" — *Prof. Deepika Mirchandani, Ms. Priyanka Mall* — 348

54. Interpreting Sacrifice as Signs of Omen : A Study of the Sacrificial Practices of the *Boroks* faith in Tripura — *Rati Mohan Tripura* — 361

55. Music therapy for Parkinson's disease on the basis of Biorhythm theory of Ayurveda — *Riyana Sreedharan, Dr. Karuna Nagarajan* — 365

56. A Study of Antiquity of Hemp in Global and Indian context along with Ethnographic Findings in Uttarakhand — *Madhushree Barik* — 376

57. Analyzing Social Media Dependency of Youth : A Multicultural Review Study — *Naveen Kumar, Dr. Vijay Kumar* — 381

58. E-Marketing in Tourism : A Necessity after Covid-19 — *Divyajit, Ritu Rani, Dr Amit Kumar Singh* — 390

59. *The Bhagavad Gita* for Engineering Students : Nurturing Leadership Skills — *Dr. Ram Avtar, Dr. Rakhi Sharma* — 401

60. Collaborative Nature and Challenges of Folkloristic Study as Historical Science — *Amit Kumar, Abhishek Prasad* — 409

61. Feminist Concerns: Elevating and Enriching the Consciousness of Women through the celebration of Female Solidarity and Sisterhood in the Works of Suniti Namjoshi — Meena Shanker, Dr. S. Kalamani — 422

62. Social and Psychological Trauma among The Transgenders : A Study on the Selected Life Writings — *Muktha Manoj, Pranamya Snehajan, Shilpa M. Chandran* — 428

63. शास्त्रीय एवं उपशास्त्रीय संगीत विधा में होली और धमार (गायन शैली) के विविध आयाम — *प्रेरणा अग्रवाल* — 437

64. The Socio-cultural Significance of Ladishah in Kashmir, A Study of the Evolution of a Satirical Folk Song — *Yasmeena Bano, Ishtaiq Ahmad Raina* — 444